एक अवसरवादी जीन

क्या गिलास आधा भरा है या आधा खाली है? यह सवाल दरअसल सकारात्मक व नकारात्मक सोच के बीच के अंतर को व्यक्त करता है। ऐसा माना जाता है कि एक जीन है जो हमें सकारात्मक या नकारात्मक सोच की ओर धकेलता है। मगर ताज़ा अनुसंधान से पता चला है कि इसी जीन का एक संस्करण है जो आम तौर पर व्यक्ति को मायूस करता है मगर साथ ही सकारात्मक सोच की ओर ध्यान दिलवाने में मदद करता है।

पहले के अध्ययनों में 5-HTTLPR सेरोटोनिन ट्रांसपोर्टर जीन के लघु संस्करण का सम्बंध दुर्बलता और अवसाद से जोड़ा गया था। जबकि इसी जीन के दीर्घ संस्करण के साथ खुशनुमा मिज़ाज का सम्बंध होता है।

मामले की और खोजबीन के उद्देश्य से हॉलैंड युनिवर्सिटी ऑफ एसेक्स, यू.के. की एलेन फॉक्स और उनके सहयोगियों ने दीर्घ संस्करण वाले 62 और लघु संस्करण वाले 54 व्यक्तियों के साथ कम्प्यूटर पर एक कवायद की। इसमें कम्प्यूटर के पर्दे पर एक लक्ष्य को पहचानना होता था। यह लक्ष्य बेतरतीबी से किसी सकारात्मक या नकारात्मक छवि के ऊपर प्रकट होता था। मगर कभी-कभी वालंटियर्स को न बताते हुए टीम लक्ष्य को हमेशा कभी सकारात्मक तो कभी नकारात्मक चित्रों पर पेश करती थी।

देखा गया कि उक्त जीन के लघु संस्करण वाले वालंटियर्स इस बात को पहचान गए थे और वे लक्ष्य को पहचानने का काम औसतन 40-60 मिलीसेकंड जल्दी कर लेते थे बनिस्बत उस स्थिति के जब लक्ष्य बेतरतीबी से प्रस्तुत किया जाता था। दूसरी ओर, दीर्घ संस्करण वाले लोगों के प्रदर्शन में इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ा।

फॉक्स का कहना है कि लघु संस्करण सिर्फ दुर्बलता का द्योतक नहीं है। उनका कहना है कि यह एक 'अवसरवादी' जीन है जो व्यक्ति को भावनाओं - सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह की भावनाओं - के प्रति ज़्यादा संवेदी बनाता है। ***(स्रोत फीचर्स)***